

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मोक्ष, सत्र 16, पवित्रीकरण, भाग 2, ऐतिहासिक पुनर्वलोकन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा उद्धार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 16, पवित्रीकरण, भाग 2, ऐतिहासिक पुनरावलोकन है।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें, दयालु पिता।

हम आपके अनुग्रह के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जो हमें बचाता है, हमें रखता है, हमें उपहार देता है, और हमें सुरक्षित घर ले जाएगा। हमें आशीर्वाद दें क्योंकि हम ईसाई जीवन के बारे में ईश्वरीय पुरुषों और महिलाओं से सीखते हैं। हमें अपने साथ चलने में प्रोत्साहित करें; हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन के रूप में, पवित्रता पर बाइबिल के सूत्रों और व्यवस्थित सूत्रों पर जाने से पहले, हम ईसाई जीवन पर पाँच अलग-अलग दृष्टिकोणों को देख रहे हैं। हमने शुरू करने के लिए कहा, उनमें बहुत कुछ समान है, और इसलिए हम एक तरह से, उनके मतभेदों पर अनुचित रूप से जोर दे रहे हैं, लेकिन फिर भी, वे वास्तविक मतभेद हैं।

हमने लूथरन और वेस्लेयन विचारों पर विचार किया और अब केसविक दृष्टिकोण पर। केसविक, उत्तरी इंग्लैंड में 1875 से वार्षिक केसविक सम्मेलन आयोजित किया जाता रहा है। इन सम्मेलनों से पवित्रीकरण का एक विशेष दृष्टिकोण उभरा, जिसे केसविक धर्मशास्त्र या उच्च जीवन आंदोलन के रूप में जाना जाता है, जिसने कई लोगों को प्रभावित किया है।

यह धर्मशास्त्र पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से विजयी ईसाई जीवन जीने पर जोर देता है। वेस्लेयन शिक्षकों ने शुरुआती सम्मेलनों पर प्रभाव डाला, जिनमें जॉन वेस्ले स्वयं, जॉन विलियम प्लेचर और एडम क्लार्क, वेस्लेयन शामिल थे। पिछले कुछ वर्षों में, कई ईसाई नेताओं ने केसविक में भाषण दिया है।

इनमें मिशनरी हडसन टेलर और एमी कारमाइकल, भक्ति लेखक ओसवाल्ट चेम्बर्स और प्रचारक बिली ग्राहम शामिल हैं। 2005 में, स्टीफन बरबस ने आंदोलन के इतिहास और धर्मशास्त्र के लिए मुख्य स्रोत, सो ग्रेट साल्वेशन लिखा। इसे उपशीर्षक के साथ केसविक कन्वेंशन का इतिहास और संदेश कहा जाता है।

केसविक धर्मशास्त्र की विशिष्टता पर ध्यान देने से पहले, जिनमें से कुछ विवादास्पद हैं, हम ध्यान दें कि यह ईसाई जीवन के संबंध में कई सामान्य इंजीलवादी महत्वों को साझा करता है। यह मसीह के प्रभुत्व और व्यक्तिगत पवित्रता पर जोर देता है और मिशनों के लिए उत्साह को बढ़ावा देता है। यह पवित्रता की नींव के रूप में मसीह के पूर्ण कार्य और विश्वास द्वारा औचित्य को बढ़ाता है।

यह सही ढंग से सिखाता है कि न केवल औचित्य बल्कि पवित्रता भी मसीह में विश्वास के द्वारा जीनी चाहिए। यह पवित्रता और प्रेम के जीवन के लिए आत्मा की शक्ति पर निर्भरता सिखाता है। केसविक के धर्मशास्त्र के अनुसार, ईसाई जीवन में दो प्रमुख संकट शामिल हैं: औचित्य और पवित्रता।

और ये आम तौर पर अलग-अलग समय पर होते हैं। सुधारकों ने सिखाया कि औचित्य अनुग्रह से होता है, मसीह में विश्वास के माध्यम से। पवित्रीकरण औचित्य के बाद होने वाली एक बाद की घटना है, और यह भी मसीह में विश्वास के माध्यम से होता है।

केसविक धर्मशास्त्र सिखाता है कि पवित्र आत्मा के साथ यह दूसरा सामना, दूसरा आशीर्वाद, एक सफल ईसाई जीवन के लिए आवश्यक है। दूसरा आशीर्वाद मसीह में विश्वासियों को पवित्रता और ईश्वर की गहरी बातों में प्रगति करने में सक्षम बनाता है। ईसाई समर्पण और विश्वास के माध्यम से औचित्य से पवित्रीकरण, दूसरे आशीर्वाद की ओर बढ़ते हैं।

वास्तव में, ईसाई जीवन में कड़ी मेहनत करना बेकार है। एक प्रसिद्ध नारे को दोहराते हुए, न्यायोचित विश्वासियों को एक विजयी ईसाई जीवन का आनंद लेने के लिए, सब कुछ छोड़ देना चाहिए और भगवान पर छोड़ देना चाहिए। उन्हें पवित्रता के लिए अपने स्वयं के प्रयासों को छोड़ देना चाहिए और भगवान को, आत्मा के द्वारा, उनके माध्यम से ऐसा करने देना चाहिए।

कई लोगों को यह शांतवाद जैसा लगता है, यह दृष्टिकोण कि आध्यात्मिकता की कुंजी मानवीय निष्क्रियता और निष्क्रियता है। आलोचकों का आरोप है कि केसविक शिक्षण विश्वासियों को पाप से लड़ने से हतोत्साहित करता है और इसके बजाय आत्मा पर भरोसा करके उससे निपटने के लिए प्रेरित करता है। केसविक धर्मशास्त्र का मानना है कि हम विश्वास के द्वारा औचित्य और पवित्रता प्राप्त करते हैं, जैसा कि हमने कहा है।

इसलिए, हम परमेश्वर से इसके लिए प्रार्थना करके पवित्रता प्राप्त करते हैं। हालाँकि ईसाई धर्म परिवर्तन के समय पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं, लेकिन उन्हें निर्णय के संकट बिंदु पर आना चाहिए और विश्वास के द्वारा पवित्रता के उच्च जीवन में प्रवेश करने के लिए आत्मा पर भरोसा करना चाहिए। औचित्य का अर्थ है मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करना।

पवित्रीकरण का दूसरा कार्य उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करना है। हालाँकि यह इस जीवन में पाप रहित पूर्णता की ओर नहीं ले जाता है, जो केवल अगले जीवन में ही घटित होगा, लेकिन यह ईसाई जीवन में पाप पर विजय पाने में निरंतर सफलता की ओर ले जाना चाहिए। जे. रॉबर्टसन मैकक्लिक्केन, जो पवित्रीकरण के केसविक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं, दोष, उद्धरण, अविश्वास के साथ औसत ईसाई और अक्सर पाप पर विजय न पाकर और मसीह की आज्ञा का पालन न करके गैर-विश्वासियों की तरह व्यवहार करते हैं।

उनके लिए उनका प्रतिकारक सामान्य ईसाई है, उद्धरण चिह्नों के भीतर, यानी, वह जो पवित्रता की केसविक समझ के अनुसार जीवन जीता है। मैं जे. रॉबर्टसन मैकक्लिक्केन को उद्धृत कर रहा हूँ, जो कोलंबिया बाइबल कॉलेज और सेमिनरी में अपने नेतृत्व के लिए प्रसिद्ध हैं और अपनी

पत्नी की पूर्णकालिक देखभाल करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ने के लिए प्रसिद्ध हैं, जब वह गंभीर मनोभ्रंश से पीड़ित थीं और खुद की देखभाल करने में असमर्थ थीं। लोगों ने कहा, तुम मूर्ख हो! तुम्हारे पास यह प्रतिष्ठित पद है, और तुम इतने सारे लोगों की मदद कर रहे हो।

और उसने कहा, मैं भगवान की कृपा से एक वफादार पति बनूंगा और स्कूल की देखभाल के लिए भगवान पर भरोसा रखूंगा, जो उसने किया। तो, सराहनीय जीवन, इसमें कोई सवाल नहीं है। ईश्वरीय व्यक्ति।

और वह स्कूल मिशनरियों को भेजने के लिए मशहूर रहा है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि केसविक धर्मशास्त्र पूरी तरह से सही है। जे रॉबर्टसन मैककिलकेन को उद्धृत करते हुए, सामान्य ईसाई, कृतघ्नता और उदासीनता, यहां तक कि शत्रुता के प्रति प्रेमपूर्ण प्रतिक्रियाओं की विशेषता रखता है, और दुखी परिस्थितियों के बीच खुशी से भरा होता है और जब सब कुछ गलत हो रहा होता है तो शांति से भरा होता है।

सामान्य मसीही प्रलोभन के साथ लड़ाई में जीतता है, लगातार परमेश्वर के नियमों का पालन करता है, और आत्म-नियंत्रण, संतोष, विनम्रता और साहस में बढ़ता है। विचार प्रक्रियाएँ पवित्र आत्मा के नियंत्रण में हैं, और शास्त्र निर्देश देते हैं कि सामान्य मसीही यीशु मसीह के दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रामाणिक रूप से दर्शाता है। ईश्वर का उसके जीवन में पहला स्थान है, और दूसरों का कल्याण व्यक्तिगत इच्छाओं से अधिक प्राथमिकता रखता है।

सामान्य मसीही के पास न केवल ईश्वरीय जीवन जीने की शक्ति है, बल्कि चर्च में प्रभावी सेवा के लिए भी शक्ति है। सबसे बढ़कर, उसके पास प्रभु के साथ निरंतर संगति का आनंद है। यह पवित्रीकरण के पाँच दृष्टिकोण, जॉर्डरवन 1996 से है।

जाहिर है, पाँच दृष्टिकोणों में से एक केसविक धर्मशास्त्र है, पृष्ठ 151। मैं पेंटेकोस्टल और सुधारवादी विचारों का इलाज करने के बाद इनका मूल्यांकन करने जा रहा हूँ। ईसाई जीवन का पेंटेकोस्टल दृष्टिकोण।

पेंटेकोस्टलिज्म की उत्पत्ति 20वीं सदी के पहले दशकों और टोपेका, कंसास में चार्ल्स परम और लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में अजुसा स्ट्रीट में विलियम सेमोर के मंत्रालयों से जुड़ी है। पेंटेकोस्टलिज्म को समझने के लिए, हमें पवित्र आत्मा की तीन तरंगों से परिचित होना चाहिए, जिन्हें तथाकथित कहा जाता है। पहली लहर क्लासिक पेंटेकोस्टलिज्म है, जिसका वर्णन ऊपर किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप नए संप्रदायों का उदय हुआ, जैसे कि असेंबली ऑफ गॉड।

दूसरी लहर 1960 और 70 के दशक का करिश्माई आंदोलन है जिसने मुख्य प्रोटेस्टेंट चर्चों और रोमन कैथोलिक चर्च को प्रभावित किया। इसे यह नाम करिश्मा, या पवित्र आत्मा के चमत्कारी उपहारों पर जोर देने के कारण मिला। तीसरी लहर 1980 के दशक में शुरू हुई और इसकी विशेषता थी कि इसमें शक्ति सुसमाचार के साथ-साथ संकेत और चमत्कार भी शामिल थे।

पहली लहर, पेंटेकोस्टलिज्म, असेंबली ऑफ गॉड। दूसरी लहर 60 और 70 के दशक का करिश्माई आंदोलन था। तीसरी लहर, संकेत और चमत्कार, फुलर सेमिनरी, पावर इंजीलिज्म।

बायरन डी. क्लॉस, जो असेंबली ऑफ गॉड में एक सम्मानित पेंटेकोस्टल नेता हैं, क्लासिक पेंटेकोस्टलिज्म की पांच खासियतें साझा करते हैं। उनका योगदान एक किताब में है जिसे मैंने दो अन्य भाइयों, टोनी शूट और क्रिस मॉर्गन के साथ मिलकर संपादित किया है, जिसका नाम है व्हाई वी बिलॉन्ग, इवेंजेलिकल यूनिटी एंड डेनोमिनेशनल डाइवर्सिटी, जिसमें छह परंपराओं के भाइयों ने साझा किया, नंबर एक, उनके लिए एक इंजील ईसाई होना उनकी अपनी विचारधारा से ज़्यादा महत्वपूर्ण क्यों है। और नंबर दो, यह क्या है, उनके लिए लूथरन, एक रिफॉर्मर्ड ईसाई, एक बैपटिस्ट, एक पेंटेकोस्टल, एक मेथोडिस्ट या एक एंग्लिकन होना क्या मायने रखता है, जनरल ब्रे।

मैं प्रभु को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे याद दिलाया। यह असामान्य है। वैसे भी, उस समय कैनसस सिटी, कैनसस में असेंबली ऑफ गॉड सेमिनरी के अध्यक्ष बायरन डी. क्लॉस ने ईसाई जीवन के बारे में पेंटेकोस्टल दृष्टिकोण लिखा था।

यहाँ उनके पाँच विषय हैं। इन ऐतिहासिक विषयों में औचित्य, पाप की परमेश्वर द्वारा क्षमा, पवित्रीकरण, पाप की शक्ति से मुक्ति, दिव्य उपचार, मसीह का दूसरा आगमन और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा शामिल हैं। अधिकांश लोग इनमें से अंतिम को पेंटेकोस्टल धर्मशास्त्र की परिभाषित विशिष्टता मानते हैं।

क्योंकि इसे मोक्ष के बाद दूसरा आशीर्वाद माना जाता है, इसलिए संपूर्ण पवित्रीकरण के वेस्लेयन द्वितीय आशीर्वाद धर्मशास्त्र से कुछ समानता है। हालाँकि, वेस्लेयन शिक्षण ईसाई पूर्णता से संबंधित है, जबकि पेंटेकोस्टल द्वितीय आशीर्वाद शिक्षण ईसाइयों के जीवन में ईश्वर की शक्तिशाली उपस्थिति से संबंधित है। हालाँकि पवित्रता पेंटेकोस्टल तीन-चरणीय उद्धारशास्त्र को मानते हैं, दोनों के साथ, मैं इसे विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा सुधारवादी प्रोटेस्टेंट औचित्य, पेंटेकोस्टल द्वितीय आशीर्वाद और वेस्लेयन द्वितीय आशीर्वाद कहूँगा, सभी दो औचित्य के बाद, हम क्लासिक पेंटेकोस्टलिज्म पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो आत्मा के बपतिस्मा में वेस्लेयन संपूर्ण पवित्रीकरण को नहीं जोड़ता है।

ईसाई जीवन के बारे में शास्त्रीय पेंटेकोस्टल दृष्टिकोण यह मानता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रारंभिक उद्धार से अलग है, जिसे औचित्य या पुनर्जन्म के रूप में देखा जाता है। आत्मा में बपतिस्मा का अर्थ है सफल ईसाई जीवन और सेवा के लिए आत्मा की शक्ति प्राप्त करना। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शास्त्रीय पेंटेकोस्टल उन लोगों को ईसाई मानते हैं जिन्होंने यीशु में विश्वास किया है, यदि उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है।

यह आपको ईसाई नहीं बनाता, यह आपको एक शक्तिशाली ईसाई बनाता है। यह आपको ईश्वर की शक्ति का उपयोग करने वाला ईसाई बनाता है। उद्धार के लिए पुनर्जन्म आवश्यक है।

उद्धार के लिए आत्मा का बपतिस्मा आवश्यक नहीं है। इसे एकता कहा जाता है। पेंटेकोस्टलिज्म यही सिखाता है, और यह एक और सुसमाचार है। लेकिन क्लासिक पेंटेकोस्टलिज्म में ईश्वर की

सभाएँ यह नहीं कहती हैं कि आपको पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा लेना चाहिए, जैसा कि अन्य भाषाओं में बोलने से पता चलता है, जो उद्धार पाने का एक तरीका है।

नहीं। वे कहते हैं कि आत्मा का बपतिस्मा उद्धार के लिए नहीं बल्कि महत्वपूर्ण ईसाई जीवन और सेवा के लिए आवश्यक है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि शास्त्रीय पेंटेकोस्टलिज्म इस बात पर जोर देता है कि दूसरे आशीर्वाद के साथ-साथ आत्मा के बपतिस्मा के प्रमाण के रूप में अन्य भाषाओं में बोलना, ग्लोसोलालिया भी होना चाहिए।

धर्मांतरण के बाद आत्मा के बपतिस्मा के बारे में पेंटेकोस्टलवाद का दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि वे आध्यात्मिक उपहारों की निरंतरतावाद को मानते हैं, जो समाप्तिवाद के विपरीत है जो यह मानता है कि हस्ताक्षरित उपहार प्रेरितों द्वारा नए नियम के लिखे जाने के साथ ही समाप्त हो गए थे। ग्रेग एलिसन ने अपनी ऐतिहासिक धर्मशास्त्र पुस्तक में, और ऑनलाइन भी, गॉस्पेल गठबंधन वेबसाइट पर एक निबंध में, निरंतरतावाद के बारे में लिखा है, उद्धारण, यह स्थिति मानती है कि आत्मा चर्च को नए नियम में करिश्मा के रूप में सूचीबद्ध सभी आध्यात्मिक उपहार देना जारी रखती है, जिसमें तथाकथित संकेत या चमत्कारी उपहार, ज्ञान का शब्द, बुद्धि का शब्द, भविष्यवाणी, चमत्कार, चंगाई, अन्य भाषाओं में बोलना और अन्य भाषाओं की व्याख्या करना शामिल है। कुछ में सभी नहीं, लेकिन कुछ में भूत-प्रेत भगाने शामिल होंगे।

हमारे पेंटेकोस्टल प्रतिनिधि और ईश्वरीय व्यक्ति बायरन क्लॉस हमें पेंटेकोस्टलिज्म के विश्व और जीवन के दृष्टिकोण के बारे में बताते हैं, और मैं उद्धृत करता हूँ, कार्य-कारण के प्रश्न के लिए जो विश्वदृष्टि निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है, ईश्वरीय पहल केवल एक आदर्श श्रेणी नहीं है, बल्कि पेंटेकोस्टलिज्म के लिए एक शक्तिशाली वास्तविकता है। आधुनिकता का प्रतीक पवित्र-धर्मनिरपेक्ष द्वंद्व को अस्वीकार कर दिया गया है और इसे ईश्वर की शक्ति और उपस्थिति की तत्काल उपलब्धता की पुष्टि के साथ बदल दिया गया है। हम दुनिया को एक वास्तविकता निर्माण के माध्यम से देखते हैं जिसमें ईश्वर निकट है और अपने चर्च के माध्यम से अपनी शक्तिशाली उपस्थिति का स्पष्ट प्रमाण प्रदान करता है।

उद्धारण समाप्त करें। शक्ति और सेवा के लिए आत्मा के बपतिस्मा का पेंटेकोस्टल सिद्धांत मसीह के दूसरे आगमन पर जोर देने के साथ मिलकर विश्व मिशनों के लिए एक शक्तिशाली प्रेरणा उत्पन्न करता है। परिणामस्वरूप, आज, पेंटेकोस्टल और करिश्माई ईसाई रोमन कैथोलिक धर्म के बाद ईसाइयों का दूसरा सबसे बड़ा समूह और दुनिया में प्रोटेस्टेंट का सबसे बड़ा समूह बनाते हैं।

उद्धारण: 2020 तक, वैश्विक स्तर पर, आत्मा-सशक्त आंदोलन में 644 मिलियन ईसाई थे, जिसका अर्थ है पेंटेकोस्टल और करिश्माई, जो दुनिया भर के सभी ईसाइयों का 26% प्रतिनिधित्व करते हैं। वास्तव में, यह एक वेबसाइट, www.gordonconwell.edu रिसर्च स्लैश ग्लोबल पेंटेकोस्टलिज्म से है, जिसे अप्रैल 2022 में एक्सेस किया गया। ईसाई जीवन के लूथरन, वेस्लेयन, केसविक और पेंटेकोस्टल दृष्टिकोण।

ईसाई जीवन के बारे में सुधारवादी दृष्टिकोण। 16वीं शताब्दी के सुधार ने सुसमाचार, सिद्धांत, आराधना और गायन, चर्च, उपदेश और संस्कार, बाइबिल अनुवाद और ईसाई जीवन के बाइबिल आधारित पुनरुद्धार को जन्म दिया। सुधारवादियों ने उन सभी क्षेत्रों में बाइबिल को लागू करने का प्रयास किया।

सुधार की सुधार शाखा ने लूथरन और एंग्लिकन शाखाओं की तुलना में सिद्धांत और चर्च जीवन में अधिक परिवर्तन किए हैं। मैं निष्पक्षता में यह भी जोड़ सकता हूँ, लेकिन एनाबैप्टिस्ट आंदोलन जितना नहीं। पवित्रीकरण के अन्य विचारों की तरह, जिन्हें इस विचार से पहले माना गया था, जॉन कैल्विन और उनके धार्मिक उत्तराधिकारियों ने औचित्य के बाइबिल के दृष्टिकोण को अपनाया।

औचित्य। परमेश्वर पिता उन सभी को धर्मी घोषित करता है जो मसीह पर भरोसा करते हैं, जब वह मसीह की धार्मिकता को उन पर आरोपित करता है और उन्हें अपने बेटे या बेटियों के रूप में स्वीकार करता है। पवित्रीकरण के सुधारवादी दृष्टिकोण में पिछले चार दृष्टिकोणों के साथ बहुत कुछ समान है।

इसमें धर्मग्रंथों के प्रति उच्च दृष्टिकोण है और यह लगातार त्रिदेव, पाप, मसीह और उनके प्रायश्चित, उद्धार, पवित्र आत्मा, चर्च और अंतिम चीजों के सिद्धांत को सिखाता है। यह लूथर के ईसाइयों के सिद्धांत को सिमुल्टस एट पिकेटर के रूप में स्वीकार करता है, साथ ही साथ ईश्वर की दृष्टि में न्यायोचित, धर्मी और फिर भी अपने जीवन में, अक्सर पापी। वह कानून और सुसमाचार के बीच लूथरन भेद को स्वीकार करता है, लेकिन इसे बाइबल की व्याख्यात्मक कुंजी के रूप में नहीं मानता है, जैसा कि वह और उसके उत्तराधिकारी मानते हैं।

इसके बजाय, यह सृष्टि, पतन, मुक्ति और पूर्णता की बाइबिल की कहानी का पता लगाता है और अब्राहमिक / नई वाचा में नियमों के बीच प्राथमिक उद्धारक एकता को देखता है। सुधारवादी दृष्टिकोण वेस्लेयन और पेंटेकोस्टल द्वितीय आशीर्वाद विचारों दोनों से अलग है। यह वेस्लेयन की ईसाई पूर्णता को अस्वीकार करता है और इसके बजाय आजीवन, प्रगतिशील पवित्रता को मानता है।

यह धर्म परिवर्तन के बाद आत्मा के बपतिस्मा के पेंटेकोस्टल दृष्टिकोण को भी खारिज करता है। इसके बजाय, यह मानता है कि धर्म परिवर्तन के समय, सभी विश्वासियों को चर्च में मसीह के शरीर में आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है। यह पवित्रता के लिए ईश्वर की शक्ति पर निर्भर रहने पर केसविक के जोर की सराहना करता है, लेकिन जाने देने की उसकी धारणा को खारिज करता है।

इसके बजाय, यह पवित्रशास्त्र की ओर इशारा करता है जो विश्वासियों से पाप से लड़ने और परमेश्वर के लिए जीने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा खर्च करने का आग्रह करता है। रोमियों 8:13, क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार जीओगे, तो मरोगे। परन्तु यदि आत्मा से शरीर की क्रियाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।

फिलिप्पियों 3:12 में पौलुस कहता है कि वह मसीही जीवन में प्रयास करता है। इसका मतलब यह नहीं कि मैंने इसे पहले ही प्राप्त कर लिया है या मैं पहले से ही परिपूर्ण हूँ। उसने अभी तक मृतकों के पुनरुत्थान को प्राप्त नहीं किया है, जैसा कि पिछली आयत में बताया गया है।

लेकिन मैं इसे अपना बनाने के लिए आगे बढ़ता हूँ क्योंकि मसीह यीशु ने मुझे अपना बना लिया है। और ईसाई जीवन पर मेरी पसंदीदा आयतों में से एक है। कुलुस्सियों 1:29, अंतिम आयत।

इसके लिए, हर इंसान को मसीह यीशु में परिपूर्ण और परिपक्व के रूप में प्रस्तुत करना। इसके लिए, मैं परिश्रम करता हूँ। यह एक मजबूत शब्द है, कोपियाओ।

इसका मतलब है मेहनत करना, परिश्रम करना, अपने काम में पसीना बहाना। इसके लिए मैं मेहनत करता हूँ। ईश्वर की सारी ऊर्जा के साथ संघर्ष करता हूँ जो मेरे भीतर इतनी शक्तिशाली रूप से काम करती है।

मुझे यह बहुत पसंद है। हम कड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन साथ ही, जब हम कड़ी मेहनत करते हैं, तो हमारा भरोसा भगवान पर होता है।

हमें अपनी मेहनत और काम करने की क्षमता से कहीं ज़्यादा काम करना चाहिए। पवित्रीकरण के सुधारित सिद्धांत में निश्चित या प्रारंभिक पवित्रीकरण, प्रगतिशील या आजीवन पवित्रीकरण और अंतिम पवित्रीकरण के बीच अंतर किया गया है। जैसा कि हम व्यवस्थित सूत्रों पर पहुंचने पर देखेंगे।

हमेशा के लिए, परमेश्वर ने लोगों को निश्चित पवित्रता में संत बनने के लिए अलग कर दिया। जब यीशु वापस आएगा, तो परमेश्वर उन्हें पूर्ण पवित्रता में पुष्ट करेगा। अपनी आत्मा के द्वारा, वह उन्हें वर्तमान में प्रगतिशील पवित्रता में बढ़ने का कारण बनता है।

ईसाई जीवन के सिद्धांत के बारे में बात करते समय यह हमारी मुख्य चिंता है। सोला स्क्रिप्टुरा ईसाई जीवन के सुधारित दृष्टिकोण का आधार है। क्योंकि कैल्विन बाइबिल के हिब्रू और ग्रीक पाठों से प्रतिदिन व्याख्यान देते थे।

सोला ग्रेटिया कैल्विन के संस्थानों के अंतिम दो शब्दों पर आधारित एक नारे से कहीं अधिक है: सारी महिमा केवल ईश्वर को। बल्कि, यह धर्मशास्त्र और नैतिकता का अंतिम लक्ष्य है। सुधारवादी उद्धारशास्त्र त्रित्ववादी है, जो चुनाव में पिता की भूमिका, अपने रक्त द्वारा छुटकारे में पुत्र की भूमिका और मसीह के साथ एकता में आत्मा के उद्धार के अनुप्रयोग पर जोर देता है।

जाहिर है, मैं सुधारवादी हूँ, और ये व्याख्यान शुरू से अंत तक यही दर्शाते हैं। और मैं, प्रभु की इच्छा से, अन्य विश्वासियों और मसीह में हमारे मतभेदों के प्रति एक अच्छा रवैया रखना चाहता हूँ। चर्च की एकता मेरे लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं बिना किसी माफी के सुधारवादी हूँ।

वास्तव में, मसीह के साथ एकता पवित्रीकरण के सुधारित दृष्टिकोण की प्रतिभा है। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ एकता का अर्थ है अभी उसके साथ दुख उठाना और बाद में उसके

साथ महिमा पाना। हमें मसीह से जोड़ने में आत्मा की भूमिका का अर्थ है कि विश्वासी मसीह में वास्तव में नए हैं।

लेकिन जैसा कि एंथनी होकेमा ने मुझे अपनी किताबों में सिखाया है, जिसमें सेव्ड बाय ग्रेस भी शामिल है, जो मोक्ष के अनुप्रयोग पर एक किताब है, हम पहले से ही मसीह में वास्तव में नए हैं, लेकिन हम पूरी तरह से नए नहीं हैं। वास्तव में नए लेकिन पूरी तरह से नए नहीं। उन शब्दों ने संडे स्कूल में बहुत से लोगों की मदद की है जब वे मुझे बाइबल के किसी ऐसे हिस्से से पढ़ाते हुए सुनते हैं जहाँ प्रभु पवित्रता की माँग करता है, और वे कहते हैं, हाँ, लेकिन मैं उस तरह नहीं जीता।

हमेशा नहीं, लगातार नहीं। और मैं कहता हूँ कि आपको एक स्नैपशॉट और एक मोशन पिक्चर के बीच अंतर करने की ज़रूरत है। अगर हम बाइबल के कुछ महानतम नायकों और नायिकाओं के स्नैपशॉट लें, तो डेविड ईश्वर के दिल के मुताबिक एक व्यक्ति है, जिसका मतलब है कि वह ईश्वर से बेहद प्यार करता है।

दो स्नैपशॉट। यह व्यभिचार है। यह प्रॉक्सी द्वारा हत्या है।

या पीटर, आरंभिक चर्च का महान नेता। एक ऐसा व्यक्ति जिसके पास असाधारण प्रतिभाएँ थीं, जिसे परमेश्वर को अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा वश में करना पड़ा। यहाँ पीटर है।

तीन स्नैपशॉट। स्नैप, स्नैप, स्नैप। यीशु को अस्वीकार करना।

लेकिन अगर हम दाऊद के जीवन की गति चित्र को देखें, तो वास्तव में, अपने भयंकर पापों के बावजूद, उसने प्रभु से प्रेम किया और प्रभु की खोज की तथा प्रभु के लिए जीवन जिया, जो कि शाऊल के जीवन तथा दाऊद के प्रति हत्या के इरादे से उसके विपरीत है। एक से अधिक बार, परमेश्वर ने शाऊल को दाऊद के हाथों में दिया, और उसने प्रभु के अभिषिक्त को छूने से इनकार कर दिया। इसी तरह, मेरा मानना है कि प्रभु ने हमें दाऊद और शाऊल को एक साथ दिया।

आप इनमें से कुछ विरोधाभासों पर विचार कर सकते हैं। डेविड, समर्पित विश्वासी भी भयंकर पाप कर सकते हैं। और जिनके पास महान उपहार, योग्यताएँ और पद हैं, वे भी कभी-कभी बचाए नहीं जा सकते।

मैंने शमूएल की पुस्तकों पर दो पूर्ण विशेषज्ञों और विश्व-स्तरीय विद्वानों के साथ काम किया। वे दोनों इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि शाऊल, यद्यपि ईश्वर द्वारा उपहारित था, यद्यपि उस पर आत्मा आई और उसने भविष्यवाणी की, फिर भी यह बहुत ही असाधारण बात थी। और लोगों ने कहा, क्या? क्या शाऊल भी भविष्यवक्ताओं में से एक है? क्योंकि जाहिर तौर पर उसका कभी पुनर्जन्म नहीं हुआ था।

इसी तरह, पतरस, उन तीन तस्वीरों के साथ, अपने चलचित्र में पित्तेकुस्त के बाद मसीह के लिए एक चैंपियन को दिखाता है। और पित्तेकुस्त के दिन, वह मुख्य उपदेशक है। लेकिन परमेश्वर ने पतरस के साथ यहूदा को भी दिया।

पतरस का जीवन हमें पतरस के जीवन को मज़ेदार तरीके से दिखाता है, जैसा कि दाऊद हमें प्रोत्साहित करता है। महान ईसाई भी मूर्खतापूर्ण, मूर्खतापूर्ण पाप कर सकते हैं। और फिर, मुझे ऐसा लगता है कि यहूदा शाऊल जैसा है।

प्रतिभाशाली, अन्य ग्यारह शिष्यों को मूर्ख बना रहा है। क्या तुम मजाक कर रहे हो? वे दो-दो करके बाहर चले गए। और फिर हमने पढ़ा, ओह नहीं, मैं यहूदा के साथ हूँ, यह काम नहीं करने वाला है।

हम ऐसा कभी नहीं पढ़ते। लेकिन यहूदा 12 में हम पढ़ते हैं, वह वास्तव में गरीबों के लिए चिंतित नहीं था, यीशु के पैरों पर इत्र की बरबादी का विरोध करता था। लेकिन पैसे की थैली रखने के नाते, वह उसमें से चोरी करता था।

अपूर्ण क्रिया, जीवन का एक नमूना दिखाती है। पतरस कहता है, हमें दिखाता है, ईश्वरीय लोग कभी-कभी बड़े पैमाने पर गड़बड़ करते हैं। यहूदा हमें दिखाता है, धर्मत्याग जैसी कोई चीज होती है।

धर्मत्याग एक बार अपनाए गए धर्म से विमुक्त होना है। और भगवान लोगों को वापस ला सकते हैं, लेकिन यहूदा के मामले में, उन्होंने ऐसा नहीं किया। और यहूदा मुझे बहुत विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति की तरह लगता है।

हे भगवान, उसे यीशु ने एक प्रेरित के रूप में चुना था। उसने भोजन कराया, और पाँच हज़ार लोगों को भोजन कराने के बाद उसने रोटी और मछलियाँ इकट्ठी कीं। उसने पहाड़ पर उपदेश सुना, और लगातार और लगातार।

और फिर भी, मुझे लगता है कि वह कभी भी सही मायने में बचा नहीं था, जैसा कि उसके अपने स्वामी को धोखा देने से स्पष्ट था। हम वास्तव में नए हैं, और हम पूरी तरह से नए नहीं हैं। यह तभी होगा जब मसीह वापस आएगा।

इस बीच, मसीह के साथ एकता मसीही जीवन को आगे बढ़ाती है। हम पाप की शक्ति के लिए परमेश्वर के पुत्र के साथ मर गए। और उसके साथ जीवन की नवीनता के लिए जी उठे, रोमियों 6। पवित्रशास्त्र की कहानी के साथ तालमेल में, पवित्रीकरण का सुधारित दृष्टिकोण मसीह की छवि के लिए परमेश्वर के अनुरूप विश्वासियों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो कि इमागो देई की प्रगतिशील बहाली के रूप में है, जो पतन में खराब हो चुकी परमेश्वर की छवि है।

जब परमेश्वर अपने लोगों के लिए वापस आएगा, तो वह मसीहियों को मसीह की छवि में परिपूर्ण करेगा। अब, आत्मा के द्वारा, वे मसीह का अनुकरण करते हैं क्योंकि वे चर्च को दिए गए परमेश्वर के अनुग्रह के साधनों का उपयोग करते हैं। वचन का प्रचार, संस्कारों का प्रशासन, प्रभु के भोज में बपतिस्मा, और प्रार्थना।

विचारों के मूल्यांकन में, मैं निश्चित रूप से पक्षपाती हूँ। लेकिन मैं भगवान की इच्छा से भी ऐसा ही हूँ; मेरा इरादा एक व्यापक रूप से इंजील ईसाई बनना है। और इसलिए, मैं उन लोगों की निंदा नहीं करता जो दूसरे विचारों को मानते हैं।

और वास्तव में, मैं उन सभी में ताकत देखता हूँ। निष्कर्ष में कहने वाली पहली बात वही है जो हमने शुरू में कही थी। पवित्रीकरण के इन पाँच दृष्टिकोणों में सबसे महत्वपूर्ण बातें समान हैं।

यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है, क्योंकि इसके बिना, ईसाई जीवन के विभिन्न दृष्टिकोणों की तुलना करना उनके मतभेदों पर अत्यधिक जोर देकर विकृत हो जाता है। उनके बीच मतभेद हैं। लेकिन वे मसीह में साथी विश्वासी हैं जिन्हें प्रभु में एक दूसरे को स्वीकार करना चाहिए।

वे अपने मतभेदों के बारे में भी संवाद करते हैं क्योंकि वे पाएंगे कि अगर वे ऐसा करते हैं, तो उनके पास बहुत सी समान बातें हैं। इसलिए, हम इस बात से खुश हैं कि ईसाई जीवन के जिन पाँच दृष्टिकोणों पर चर्चा की गई है, वे ईश्वर, पाप, उद्धार, पवित्र आत्मा, चर्च और अंतिम चीजों के अपने सिद्धांतों में रूढ़िवादी हैं। ऐसा कहने का मतलब यह नहीं है कि विचारों के बीच मतभेदों को कम किया जाए।

यह सुसमाचारी विश्वास की सच्चाईयों के उनके साझा स्वीकारोक्ति से शुरू होता है। फिर भी, ईसाई जीवन के पाँच दृष्टिकोणों के बीच मतभेद हैं। और वे महत्वपूर्ण हैं।

हालाँकि सभी इंजीलवादी लूथर के सुसमाचार की पुनः खोज के लिए उनके ऋणी हैं, लेकिन प्रगतिशील पवित्रता की पर्याप्त पुष्टि करने में उनकी हिचकिचाहट उनके धार्मिक दृष्टिकोण में बनी हुई है। उसी ईटीएस सम्मेलन में, जिसका मैंने इस खंड की शुरुआत में उल्लेख किया था, मैंने प्रसिद्ध लूथरन धर्मशास्त्री डेविड पी. स्केयर को यह कहते हुए सुना, उद्धरण, ईसाई जीवन में कोई प्रगति नहीं है, विस्मयादिबोधक चिह्न, उद्धरण बंद करें। हम सम्मानपूर्वक असहमत हैं।

और 2 कुरिन्थियों 3:18, इफिसियों 4:15, 4:20-24, कुलुस्सियों 1:9-10, 1 तीमुथियुस 4:12-15, इब्रानियों 6:1, 1 पतरस 2:2, 2 पतरस 1:5-8, 1 यूहन्ना 2:3-6, 1 यूहन्ना 3:4-6, 1 यूहन्ना 3:14-18 की ओर इशारा करें। मैं उन लोगों के लिए इसे फिर से करने जा रहा हूँ जो नोट्स ले रहे हैं। 2 कुरिन्थियों 3:18, इफिसियों 4:15, और आयतें 20-24। कुलुस्सियों 1:9-10, 1 तीमुथियुस 4:12-15, इब्रानियों 6:1। लेखक कहता है, आइए हम प्राथमिक चीजों से आगे बढ़ें और बढ़ें।

1 पतरस 2:2, 2 पतरस 1:5-8, 1 यूहन्ना 2:3-6, 1 यूहन्ना 3:4-6, 1 यूहन्ना 3:14-18। हम लूथर और कैल्विन के साथ मुक्त औचित्य के सिद्धांत के महत्व पर सहमत हैं। हमारे लूथरन भाइयों और बहनों के साथ, हम कानून के सुसमाचार के भेद को स्वीकार करते हैं, खासकर पॉल में। लेकिन हम इसे लूथरन की तरह बाइबिल की व्याख्या की कुंजी नहीं मानते हैं।

हम लूथर के इस वर्णन से भी सहमत हैं कि एक ईसाई व्यक्ति एक ही समय में मसीह में धर्मी और व्यवहार में पापी होता है, बहुत बार। लेकिन हमें ईसाई जीवन की संपूर्णता का वर्णन करने के लिए यह अपर्याप्त लगता है। इसके लिए, जीवन में विकास भी शामिल है, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह की कृपा और ज्ञान का हवाला दें।

2 पतरस 3:18, और पिछले पैराग्राफ में उद्धृत आयतें, दयापूर्वक, मैं उन्हें फिर से नहीं पढ़ूंगा। हम जॉन वेस्ली के जीवन और मंत्रालय का सम्मान करते हैं। मैंने पहले एक किताब का उल्लेख किया था, मैं आर्मीनियन क्यों नहीं हूँ।

मेरे सहकर्मी माइकल विलियम्स का काम आर्मीनियस के जीवन और लेखन का अध्ययन करना था। मेरा काम वेस्ली के जीवन और लेखन का अध्ययन करना था। वाह, मुझे इस भाई के साथ संगति मिली।

कितना ईश्वरीय व्यक्ति। सुसमाचार के लिए कितना साहस। ओह, मेरा वचन।

जॉन वेस्ली सुसमाचार का प्रचार कहीं भी कर सकते थे, और उस समय ऐसा करना आम बात नहीं थी। सुसमाचार का प्रचार सिर्फ चर्च में ही किया जाना चाहिए। वे इससे सहमत नहीं थे।

वह इसे खेतों में ले गया। वह इसे हर जगह ले गया। उनके जीवन पर एक किताब कहती है कि उन्होंने रसोई में, परिवार के कमरे में, हर जगह, दूर-दराज के इलाकों में, हर जगह सुसमाचार का प्रचार किया।

और वह एक छोटा आदमी था, दुबला-पतला, और एक बड़ा आदमी उसे चोट पहुँचा सकता था। एक बार, उसने एक खलिहान में सुसमाचार की सभा की, ठीक है? और खलिहान के बाहर लोग उसे परेशान कर रहे थे। उसे धमका रहे थे।

ईश्वर की कृपा और दया से, वह उन लोगों में से एक को आमंत्रित करने में सफल रहा, जिन्हें उसने मसीह के पास पहुँचाया था। और सभा के अंत में, उस व्यक्ति ने कहा, "तुम मुसीबत में हो, छोटे आदमी। वह समूह तुम्हें शारीरिक रूप से नुकसान पहुँचाने वाला है।"

और यह आदमी बहुत बड़ा था। उसने कहा, देखो, मेरे कंधों पर चढ़ जाओ। और जब यह बात खत्म हो जाएगी, तो हम वह दरवाज़ा खोल देंगे और मैं जितना दूर भाग सकता हूँ भागूंगा।

उन्होंने ऐसा किया। उसने ऐसा किया। और उस आदमी के पैरों पर चोटें आईं।

लेकिन वेस्ली बच गया। कितना धार्मिक आदमी था। उसने खुद माना कि उसकी शादी कोई मिसाल नहीं थी।

और वह जितना हो सके घर से दूर रहता था। अपनी पत्नी से ज़्यादा समय अपने घोड़ों के साथ बिताता था। वैसे भी, हज़ारों भजनों के महान भजन-लेखक, उनके भाई चार्ल्स के साथ, मैं अब उन धिनौने कैल्विनिस्ट विरोधी भजनों को नज़रअंदाज़ करता हूँ, जो, शुक्र है, मुझे लगता है कि किसी भी भजन पुस्तक में नहीं हैं।

लेकिन ईसाई चर्च के लिए यह कितना बड़ा उपहार था और उन्होंने कितना अच्छा काम किया। और परमेश्वर ने उन्हें इंग्लैंड में पुनरुत्थान लाने के लिए इस्तेमाल किया, जिसे इसकी सख्त जरूरत थी। जॉन वेस्ली के जीवन और मंत्रालय के लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है।

मैं उनके कई विचारों से सहमत हूँ, जिसमें यह भी शामिल है कि पवित्रीकरण उनके अनुयायी बहुसंख्यक परंपरा के विरुद्ध एक प्रक्रिया है, जिसने प्रगतिशील पवित्रीकरण को अस्वीकार कर दिया, जिसकी शुरुआत उनके शिष्य एडम क्लार्क से हुई। लेकिन हम ईसाई पूर्णता या संपूर्ण पवित्रीकरण पर उनकी शिक्षा पर ठोकर खाते हैं। हम संपूर्ण पवित्रीकरण में विश्वास करते हैं।

लेकिन जैसा कि पॉल कहते हैं, यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने पर घटित होगा। 1 थिस्सलुनीकियों 5:22-23. इसे हम इच्छा प्रार्थना कहते हैं।

यह पत्र-शैली की एक उप-शैली है। पॉल की उनके लिए यही इच्छा है, और उस इच्छा को व्यक्त करना उनके लिए प्रार्थना है। शांति का परमेश्वर स्वयं आपको पूरी तरह से पवित्र करे।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन पर आपकी आत्मा, प्राण और शरीर पूरी तरह से निर्दोष रहें। अगली आयत, यानी 1 थिस्सलुनीकियों 5:23-24 कहती है, परमेश्वर विश्वासयोग्य है। वह यह करेगा।

जब यीशु फिर से आएं, तब हम पूरी तरह से पवित्र हो जाएंगे। तब तक नहीं। हम वेस्ले की इच्छा, वेस्लेयन की पवित्रता की इच्छा की प्रशंसा करते हैं और स्वीकार करते हैं कि हम अक्सर प्रभु की इस आज्ञा का पालन करने में विफल हो जाते हैं कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।

लैव्यव्यवस्था 11:44-45. 1 पतरस 1-16 में इसका हवाला दिया गया है। हालाँकि, हम इस बात से इनकार करते हैं कि इस जीवन में संपूर्ण पवित्रता की स्थिति प्राप्त की जा सकती है, यहाँ तक कि सावधानीपूर्वक वेस्लेयन भेद के साथ भी कि इसका अर्थ पूर्ण पापहीनता नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है कि परमेश्वर के प्रति ऐसे प्रेम के कारण, हमारे प्रति उसके महान प्रेम के कारण, जानबूझकर किसी ज्ञात कानून का उल्लंघन न करना।

केसविक अधिकांश क्षेत्रों में बुनियादी इंगील धर्मशास्त्रीय रूपरेखा का पालन करता है, सिवाय इसके कि इसकी एक विशिष्टता, पवित्र आत्मा के साथ दूसरी मुलाकात जो एक गहन ईसाई जीवन को सक्षम बनाती है। ईश्वरीय शिक्षकों के प्रति उचित सम्मान के साथ, हम इस दूसरे आशीर्वाद सिद्धांत को बाइबल के विरुद्ध मानते हुए अस्वीकार करते हैं। पवित्रशास्त्र हमें जाने देना और ईश्वर को जाने देना नहीं सिखाता।

यह सिखाता है कि हमें परमेश्वर के लिए जीने के लिए उसकी कृपा पर निर्भर रहना चाहिए। यह केसविक की शिक्षा के अनुरूप है। लेकिन यह हमें शांत रहने के लिए नहीं बल्कि ईसाई जीवन में सक्रियता के लिए कहता है।

हम ईसाई जीवन के लिए सैनिकों, खिलाड़ियों और किसानों से ज्यादा सक्रियता वाले मॉडल के बारे में शायद ही सोच सकते हैं, जो कि ठीक वही पेशे हैं जिनके बारे में पॉल 2 पतरस 2:4-6 में

बात करते हैं। सैनिक, खिलाड़ी, किसान, 2 पतरस 2:4-6। क्या वे जाने देते हैं और भगवान को छोड़ देते हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता।

यदि वे ईसाई हैं, तो वे ईश्वर पर भरोसा करते हैं, लेकिन वे अपनी सेना, एथलेटिक्स और खेती में बहुत मेहनत करते हैं। क्या आपके पास बगीचा है? क्या आप जानते हैं कि यह कितना काम है? आप एक सप्ताह के लिए छुट्टी पर जाते हैं, और यार, ये सब खरपतवार कहाँ से आ गए? हम मसीह में हमारे कई पेंटेकोस्टल भाइयों और बहनों के जीवन और मंत्रालयों की प्रशंसा करते हैं। हम दुनिया भर में सुसमाचार फैलाने में उनकी भूमिका से खुश हैं।

हालाँकि, हम शास्त्र की अपनी समझ के कारण उनके दूसरे आशीर्वाद सिद्धांत को भी अस्वीकार करने के लिए बाध्य हैं। हम पेंटेकोस्टल युवकों को सेवकाई के संबंध में पंगु होते हुए जानते हैं क्योंकि उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में अन्य भाषाओं में बात नहीं की थी। और फिर से, मैं यह कहूँगा, उद्धार के लिए नहीं।

यह एक पाखंड है। वे ऐसा नहीं सिखाते। शास्त्रीय पेंटेकोस्टलिज्म, जैसा कि एसेम्बलीज ऑफ गॉड द्वारा प्रदर्शित किया गया है, आपको पवित्र आत्मा प्राप्त करने के प्रमाण के रूप में अन्य भाषाओं में बोलना सिखाता है, उद्धार के लिए नहीं बल्कि ईसाई जीवन और सेवकाई में शक्ति के लिए।

यही कारण है कि ये युवा पुरुष, जिनमें से कुछ से मैं मिला हूँ, आध्यात्मिक रूप से नपुंसक महसूस करते हैं। एक व्यक्ति ने कहा कि मुझे संदेह है कि मेरे कुछ दोस्तों ने यह दिखावा किया होगा। मैं ऐसा कुछ कभी नहीं करूँगा।

इस बीच, वह एक आध्यात्मिक नपुंसक था। वह नपुंसक महसूस करता था क्योंकि उसे लगता था कि उसमें पवित्र आत्मा की कमी नहीं है। वह बचा लिया गया था।

उसका पुनर्जन्म हुआ था। उसने यीशु पर विश्वास किया था। लेकिन उसके पास प्रभु की सेवा करने के लिए दूसरा आशीर्वाद अधिकार नहीं था क्योंकि उसने अन्य भाषाओं में बात नहीं की थी।

पॉल कहते हैं कि कुरिन्थियों को एक आत्मा द्वारा एक शरीर में बपतिस्मा दिया गया था। 1 कुरिन्थियों 12:13. और बाद में उसी अध्याय में लिखते हैं, क्या सभी के पास चंगाई का वरदान है? क्या सभी अन्य भाषा बोलते हैं? क्या सभी अनुवाद करते हैं? श्लोक 30, जहाँ क्रिया विशेषण का उपयोग किया गया है, नकारात्मक क्रिया विशेषण, नकारात्मक कण, एक नकारात्मक उत्तर की आवश्यकता है।

दूसरे शब्दों में, क्या सभी लोग अन्य भाषा में नहीं बोलते हैं? नहीं, ग्रीक भाषा में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है। सभी ने आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया था, लेकिन सभी के पास कोई भी एक आध्यात्मिक उपहार नहीं था, जिसमें अन्य भाषा बोलना भी शामिल है। यह परमेश्वर की योजना के अनुसार है, ताकि चर्च के सदस्यों को एक-दूसरे की आवश्यकता हो।

एंथनी हो एकेमा का उपचार हमें आकर्षक लगता है। होकेमा ने ऑर्डो सालुटिस, मोक्ष के क्रम की पारंपरिक, सुधारित समझ को अस्वीकार कर दिया है। यह विचार है कि मोक्ष, पुनर्जन्म, बुलावा, रूपांतरण, औचित्य, गोद लेने, पवित्रीकरण और दृढ़ता के अनुप्रयोग के विभिन्न पहलुओं को एक "तार्किक क्रम" में रखा जा सकता है।

जॉन फ्रेम ने दिखाया है कि सूची में क्रम के विभिन्न अर्थों के कारण यह समस्याग्रस्त है। पुनर्जन्म बाकी के लिए एक कारण क्रम में खड़ा है, लेकिन विश्वास औचित्य और अपनाएने का साधन या साधन है, उनका कारण नहीं। मैं इस पर आगे बढ़ सकता हूँ।

इसलिए, क्रम के संदर्भ में भ्रम है - वास्तव में ऑर्डो सालुटिस में क्रम। इसके अलावा, जैसा कि हम देखेंगे, पवित्रीकरण प्रारंभिक, प्रगतिशील और अंतिम है।

आप इसे उद्धार के क्रम की सूची में एक स्थान पर कैसे रख सकते हैं? आप इसे तीन स्थानों पर रखते हैं? मुझे ऐसा नहीं लगता। यह मिश्रित हो जाता है। उद्धार के अनुप्रयोग के तत्वों को क्रमिक रूप से देखने के बजाय, वह आग्रह करता है, उद्धारण, हमें तब क्रमिक चरणों या चरणों के साथ उद्धार के क्रम के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि ईश्वर की कृपा के एक अद्भुत कार्य, उद्धार के एक मार्ग के बारे में सोचना चाहिए जिसके भीतर हम विभिन्न पहलुओं को अलग कर सकते हैं।

इसके अलावा, हालाँकि उद्धार के अनुप्रयोग के इन पहलुओं को अलग-अलग किया जाना चाहिए, वे मसीह के साथ एकता के अंतर्गत एकीकृत हैं। वे सभी एकता के उपसमूह हैं। जब परमेश्वर लोगों को आध्यात्मिक रूप से अपने पुत्र से जोड़ता है, तो वह उन्हें उद्धार के सभी आशीर्वाद प्रदान करता है।

मसीह में विश्वास करने वाला व्यक्ति पुनर्जन्म लेता है क्योंकि जब आप मसीह और जीवन में विश्वास करते हैं, तो मसीह में विश्वास के बाद एकता आती है। अनुग्रह से, विश्वास के माध्यम से, कोई व्यक्ति मसीह में विश्वास करता है; वे उस क्षण फिर से जन्म लेते हैं, धर्मी घोषित किए जाते हैं, गोद लिए जाते हैं, परिवर्तित होते हैं, पवित्र आत्मा दिए जाते हैं, और आजीवन पवित्रता की शुरुआत करते हैं। परमेश्वर उन्हें अंत तक दृढ़ता के द्वारा बनाए रखता है।

इस चर्चा में वेस्लेयनवाद, केसविक धर्मशास्त्र और पेंटेकोस्टलिज्म के दूसरे आशीर्वाद धर्मशास्त्रों के मूल्यांकन के निहितार्थ हैं। ओह, वे अलग-अलग हैं। इन तीन धर्मशास्त्रों में दो-चरणीय उद्धारशास्त्र, मोक्ष के दो-चरणीय सिद्धांत, औचित्य चरण एक, उसके बाद दूसरा आशीर्वाद है, चाहे संपूर्ण पवित्रीकरण, वेस्लेयनवाद, एक गहन जीवन मुठभेड़, केसविक धर्मशास्त्र, या पवित्र आत्मा बपतिस्मा, पेंटेकोस्टलिज्म।

वास्तव में, जैसा कि हमने पहले कहा, पवित्रता पेंटेकोस्टल में औचित्य, संपूर्ण पवित्रीकरण और पवित्र आत्मा बपतिस्मा का तीन-चरणीय उद्धारशास्त्र है। होकेमा ने अपनी पुस्तक, सेव्ड बाय ग्रेस में पृष्ठ 15 से 19 पर इसका निष्कर्ष निकाला है। वह निष्कर्ष निकालते हैं, इन प्रकार के उद्धारशास्त्र को क्यों अस्वीकार किया जाना चाहिए? हम पहले ही देख चुके हैं कि उद्धार की

प्रक्रिया की उचित समझ उस प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को क्रमिक के बजाय एक साथ देखती है।

इसलिए, ईसाई जीवन में उन्नति को धर्म परिवर्तन के बाद विशिष्ट चरणों को बढ़ाने के बजाय प्रगतिशील और निरंतर विकास के रूप में समझा जाना चाहिए। होकेमा हानिकारक परिणामों के साथ एक और निहितार्थ देखता है। मैं यह जोड़ सकता हूँ कि वह एक मधुर ईसाई व्यक्ति था जिसने अन्य विश्वासियों को स्वीकार किया।

मुझे अभी भी याद है कि सेव्ड बाय ग्रेस में उन्होंने वेस्लेयन संपूर्ण पवित्रीकरण के बारे में लिखा था, जिसे वे अस्वीकार करते हैं, वे कहते हैं, लेकिन वे सही हैं। हम विश्वासी के रूप में बहुत अधिक शारीरिक हैं। कितना सुंदर हृदय है कि वह अनुग्रह में बढ़ने की अपनी आवश्यकता को स्वीकार करता है।

यहाँ उनके द्वारा कहे गए कड़े शब्द हैं, एक मधुर और सज्जन व्यक्ति के कड़े शब्द क्योंकि वे एक धर्मशास्त्री हैं और उन्हें चेतावनी देने की आवश्यकता महसूस होती है। ये उद्धार-विज्ञान बताते हैं कि दो प्रकार के, या तीन प्रकार के ईसाई हैं। साधारण लोग, पवित्र लोग, और या आत्मा-बपतिस्मा वाले।

हालाँकि, इस तरह के भेद के लिए कोई बाइबिल आधार नहीं है। इसके अलावा, ईसाइयों का ऐसा विभाजन दो गलत और हानिकारक दृष्टिकोणों के लिए रास्ता खोलता है। उन लोगों की ओर से अवसाद जो अभी भी खुद को ईसाई जीवन के निचले छोर पर मानते हैं, और उन लोगों की ओर से गर्व जो खुद को उच्च स्तरों में से एक पर पहुँच चुके हैं।

टोनी होकेमा ने सेमिनरी में जाने और ईसाई मंत्रालय के लिए अध्ययन करने से पहले मनोविज्ञान में एमए की डिग्री हासिल की और बाद में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की, शायद प्रिंसटन विश्वविद्यालय में, मुझे याद नहीं है, इससे पहले कि वह डोगमैटिक्स पढ़ाते, जो प्रेस्बिटेरियन दृष्टिकोण को कहने का सुधारित तरीका है। सुधारित क्षेत्र में प्रेस्बिटेरियन शब्द सिस्टमैटिक्स को डोगमैटिक्स कहा जाता है। उन्होंने कैल्विन सेमिनरी में डोगमैटिक धर्मशास्त्र पढ़ाया, मुझे नहीं पता, 30 साल तक।

पवित्रीकरण, हम उचित पवित्रीकरण की ओर बढ़ते हैं, और समय के हित में हम इस बार बाइबिल की प्रस्तावना को छोड़ देंगे और सीधे व्यवस्थित सूत्रों में चले जाएंगे। पवित्रीकरण और त्रिएकत्व। तो, हमने अब तक जो किया है वह ईसाई जीवन के पाँच दृष्टिकोणों को देखना और उनका मूल्यांकन करना है क्योंकि यह वास्तव में पवित्रीकरण के व्याख्यात्मक व्यवस्थित धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के लिए हमारी प्रस्तावना है।

त्रिएकत्व में पवित्रीकरण, मसीह के साथ एकता में पवित्रीकरण, हमारे हिस्से में पवित्रीकरण, हमारी भूमिका, चर्च में पवित्रीकरण, समय में पवित्रीकरण, पवित्रीकरण और जीत और संघर्ष, पवित्रीकरण, व्यवस्थित सूत्रीकरण, पवित्रीकरण और त्रिएकत्व। आप जानते हैं, वास्तव में, आइए हम इसे अपने अगले व्याख्यान की शुरुआत में फिर से लें। ईसाई जीवन के उन विचारों और इसके कुछ मूल्यांकन को देखने के बाद यह एक अच्छा ब्रेकिंग पॉइंट है।

अगली बार, हम पवित्रीकरण और व्यवस्थित सूत्रीकरण पर चर्चा करेंगे। यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मोक्ष पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 16, पवित्रीकरण, भाग 2, ऐतिहासिक पुनरावलोकन है।